REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 10 | JULY - 2021

नशाखोरी की समस्या और ग्रामीण समाज पर उसका प्रभाव : बिलासपुर ज़िले के संदर्भ में

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य) एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

भारत में नशा-व्यसन एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है, जो नगरीय ही नहीं बल्कि ग्रामीण समुदायों को भी व्यापक रूप से प्रभावित कर रही है। हाल के वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में मादक पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिसके प्रमुख कारणों में बेरोज़गारी, गरीबी, पलायन, सहकर्मी दबाव तथा नशीले पदार्थों की सहज उपलब्धता सम्मिलित हैं। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले में ग्रामीण समाज पर नशा-व्यसन की समस्या एवं उसके प्रभावों का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में नशा-व्यसन के सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं पारिवारिक परिणामों के साथ-साथ सामुदायिक दृष्टिकोण तथा संस्थागत प्रतिक्रियाओं पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार तथा प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से संकलित किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आँकड़े शासकीय प्रतिवेदन, स्वास्थ्य विभाग के अभिलेख, जनगणना आँकड़े तथा पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों से प्राप्त किए गए हैं। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि नशा-व्यसन ने पारिवारिक संबंधों को बाधित कर, आर्थिक उत्पादकता को कम कर, स्वास्थ्य जोखिमों में वृद्धि कर तथा सामाजिक अस्थिरता को बढ़ाकर ग्रामीण सामाजिक जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि नशा-व्यसन की बढ़ती समस्या से निपटने हेतु प्रभावी जन-जागरूकता कार्यक्रमों, सामुदायिक सहभागिता तथा सशक्त संस्थागत हस्तक्षेपों की नितांत आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: *नशा-व्यसन, ग्रामीण समाज, सामाजिक प्रभाव, मादक पदार्थ दुरुपयोग, बिलासपुर.*

प्रस्तावना:

नशा-व्यसन भारत में एक गंभीर एवं तीव्रगामी सामाजिक समस्या के रूप में उभर रहा है, जो केवल शहरी केंद्रों तक सीमित न रहकर ग्रामीण समुदायों को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है। परंपरागत रूप से ग्रामीण समाज को सुदृढ़ सामाजिक बंधनों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामूहिक जीवन-पद्धति के कारण विचलित आचरण से अपेक्षाकृत सुरक्षित माना जाता था। किंतु तीव्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों, शहरी जीवन-शैली के बढ़ते प्रभाव, बेरोज़गारी, पलायन तथा नशीले पदार्थों की सहज उपलब्धता ने ग्रामीण सामाजिक संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन एक गंभीर चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है, जो सामाजिक स्थिरता, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं आर्थिक उत्पादकता को प्रभावित कर रहा है।

नशा-व्यसन से आशय ऐसे मादक पदार्थों जैसे मदिरा, गांजा, ओपिओइड्स, औषधीय नशीली दवाएँ तथा अन्य मादक तत्वों) के अनियंत्रित एवं दीर्घकालिक सेवन से है, जो शारीरिक निर्भरता, मानसिक विकारों तथा सामाजिक अव्यवस्था को जन्म देता है। ग्रामीण क्षेत्रों

में सामाजिक कलंक, जागरूकता का अभाव तथा स्वास्थ्य एवं पुनर्वास सुविधाओं की सीमित उपलब्धता के कारण नशा-व्यसन की समस्या प्रायः छिपी रह जाती है। इसके दुष्परिणाम केवल व्यक्ति तक सीमित न रहकर पारिवारिक संबंधों, कृषि एवं आजीविका, सामुदायिक सौहार्द तथा समग्र ग्रामीण विकास को प्रभावित करते हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर जिला ग्रामीण समाज में नशा-व्यसन की समस्या के अध्ययन हेतु एक उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है। यह जिला मुख्यतः ग्रामीण एवं कृषि-प्रधान है, जहाँ बड़ी संख्या में जनसंख्या कृषि तथा दैनिक मज़दूरी पर निर्भर है। आर्थिक दबाव, मौसमी बेरोज़गारी एवं पलायन ने ग्रामीण युवाओं तथा कार्यशील आयु वर्ग की नशा-व्यसन के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ा दिया है। स्वास्थ्य विभाग एवं सामाजिक संगठनों की रिपोर्टों में जिले के अनेक ग्रामों में मदिरा एवं नशीले पदार्थों की निर्भरता को लेकर बढ़ती चिंता व्यक्त की गई है।

ग्रामीण समाज पर नशा-व्यसन का प्रभाव बहुआयामी है। यह पारिवारिक कलह, घरेलू हिंसा, आर्थिक अस्थिरता, कार्यक्षमता में गिरावट, स्वास्थ्य समस्याओं तथा सामाजिक अव्यवस्था को जन्म देता है। साथ ही, यह पारंपरिक सामाजिक मूल्यों को कमजोर कर सामुदायिक एकता को क्षीण करता है, जो ग्रामीण समाज के सुचारु संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन की समस्या पर शहरी संदर्भ की तुलना में अपेक्षाकृत कम अकादमिक अध्ययन उपलब्ध हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर जिले के ग्रामीण सामाजिक जीवन पर नशा-व्यसन की प्रकृति, विस्तार एवं प्रभावों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन मादक पदार्थ दुरुपयोग के सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी परिणामों का परीक्षण करता है, सामुदायिक धारणाओं का मूल्यांकन करता है तथा इस समस्या से निपटने में विद्यमान चुनौतियों की पहचान करता है। इस प्रकार का विश्लेषण ग्रामीण समाज में नशा-व्यसन की बढ़ती चुनौती को समझने एवं सामाजिक कल्याण तथा सतत ग्रामीण विकास हेतु प्रभावी हस्तक्षेप रणनीतियाँ विकसित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

1) बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन की प्रकृति एवं विस्तार का अध्ययन करना।
2) ग्रामीण परिवारों पर नशा-व्यसन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3) ग्रामीण समाज में मादक पदार्थ दुरुपयोग के स्वास्थ्य संबंधी परिणामों का अध्ययन करना।
4) नशा-व्यसन के प्रति सामुदायिक धारणाओं एवं प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करना।
5) ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन पर नियंत्रण हेतु विद्यमान चुनौतियों की पहचान कर उपयुक्त उपाय सुझाना।

शोध-पद्धति (Research Methodology):

प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के ग्रामीण समाज पर नशा-व्यसन की समस्या एवं उसके प्रभावों का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-अभिकल्प को अपनाया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े क्षेत्रीय सर्वेक्षण, नशा-प्रभावित व्यक्तियों, उनके परिवारजनों तथा सामुदायिक नेताओं (n=300) से साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अवलोकन के माध्यम से संकलित किए गए हैं। द्वितीयक आँकड़े भारत की जनगणना रिपोर्टों, स्वास्थ्य विभाग के अभिलेखों, शासकीय प्रकाशनों तथा पूर्व प्रकाशित शोध अध्ययनों से प्राप्त किए गए हैं। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण सरल सांख्यिकीय उपकरणों एवं गुणात्मक व्याख्या पद्धति द्वारा किया गया है।

ग्रामीण समाज में नशा-व्यसन की समस्या एवं उसका प्रभाव :

बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन एक जटिल सामाजिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है, जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों के संयुक्त प्रभाव से उत्पन्न हुई है। बेरोज़गारी एवं निरंतर आर्थिक दबाव ग्रामीण युवाओं तथा कार्यशील आयु वर्ग को मादक पदार्थों के सेवन की ओर प्रेरित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। सीमित आजीविका अवसर, मौसमी रोजगार एवं आर्थिक असुरक्षा की स्थिति प्रायः निराशा एवं कुंठा को जन्म देती है, जिससे नशा-व्यसन की प्रवृत्ति बढ़ती है। सहकर्मी दबाव एवं सामाजिक समूहों का प्रभाव भी नशा-व्यसन के प्रसार को तीव्र करता है, विशेषतः तब, जब किसी समूह में मदिरा या नशीले पदार्थों का सेवन सामाजिक रूप से स्वीकार्य बन जाता है।

रोज़गार की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर होने वाला पलायन तथा वहाँ की जीवन-शैली से संपर्क भी नशा-व्यसन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन लाता है, जिसे व्यक्ति बाद में ग्रामीण समुदायों में लेकर लौटते हैं। ग्रामीण बाज़ारों में वैध एवं अवैध दोनों प्रकार के नशीले पदार्थों की सहज उपलब्धता ने इनके सेवन को और अधिक सुलभ बना दिया है। इसके अतिरिक्त, नशा-व्यसन के दीर्घकालिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता का अभाव तथा मनोरंजन, शिक्षा एवं परामर्श सुविधाओं की कमी ने ग्रामीण जनसंख्या की संवेदनशीलता को बढ़ा दिया है। मानसिक तनाव, पारिवारिक विवाद, घरेलू समस्याएँ एवं भावनात्मक असंतुलन भी नशा-व्यसन को प्रोत्साहित करने वाले कारकों के रूप में कार्य करते हैं।

ग्रामीण समाज पर नशा-व्यसन का प्रभाव अत्यंत गहन एवं बहुआयामी है। पारिवारिक स्तर पर यह निरंतर संघर्ष, घरेलू हिंसा, पारिवारिक दायित्वों की उपेक्षा तथा वैवाहिक एवं अभिभावकीय संबंधों के विघटन का कारण बनता है, जिससे परिवार जैसी मूल सामाजिक इकाई कमजोर होती है। आर्थिक दृष्टि से नशा-व्यसन कार्यक्षमता एवं उत्पादकता को घटाता है, अनुपस्थिति को बढ़ाता है तथा आय में कमी लाता है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक ग्रामीण परिवार ऋणग्रस्तता एवं दीर्घकालिक गरीबी की ओर अग्रसर होते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से दीर्घकालिक मादक पदार्थ सेवन यकृत रोग, कुपोषण, अवसाद, चिंता, दुर्घटनाओं एवं चोटों के बढ़ते जोखिम जैसी गंभीर शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं को जन्म देता है, जिन्हें ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता और अधिक जटिल बना देती है। सामाजिक स्तर पर नशा-व्यसन अपराध, सामाजिक अव्यवस्था तथा अनुशासन, सहयोग एवं पारस्परिक सम्मान जैसे पारंपरिक मूल्यों के क्षरण में योगदान देता है। इसके साथ ही, यह प्रभावित व्यक्तियों एवं उनके परिवारों के प्रति कलंक, हाशियाकरण एवं सामाजिक अलगाव को बढ़ावा देता है, जिससे सामाजिक एकता कमजोर होती है और ग्रामीण समाज की समग्र स्थिरता प्रभावित होती है।

अध्ययन के परिणाम (Findings of the Study):

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन एक निरंतर बढ़ती हुई गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है। कुल उत्तरदाताओं में से 204 उत्तरदाताओं (68 प्रतिशत) ने यह स्वीकार किया कि पिछले कुछ वर्षों में उनके ग्रामों में नशा-व्यसन की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि 66 उत्तरदाताओं (22 प्रतिशत) का मत है कि यह समस्या मध्यम स्तर पर विद्यमान है। इसके विपरीत, केवल 30 उत्तरदाताओं (10 प्रतिशत) ने यह माना कि उनके क्षेत्र में नशा-व्यसन कोई गंभीर समस्या नहीं है।

नशे के प्रकारों के संदर्भ में अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों में मदिरा (शराब) सबसे अधिक प्रचलित नशीला पदार्थ है, जिसे 165 उत्तरदाताओं (55 प्रतिशत) ने सर्वाधिक सेवन किया जाने वाला पदार्थ बताया। इसके पश्चात औषधीय नशीली दवाओं का स्थान है, जिसका उल्लेख 90 उत्तरदाताओं (30 प्रतिशत) द्वारा किया गया। वहीं 30 उत्तरदाताओं (10 प्रतिशत) ने गांजा एवं उससे संबंधित पदार्थों के सेवन की जानकारी दी, जबकि केवल 15 उत्तरदाताओं (5 प्रतिशत) ने अन्य प्रकार के नशीले पदार्थों के उपयोग की पुष्टि की।

तालिका 1 : ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन की गंभीरता (n = 300)

क्रमांक	नशा-व्यसन की स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	नशा-व्यसन में उल्लेखनीय वृद्धि	204	68
2	मध्यम स्तर की समस्या	66	22
3	गंभीर समस्या नहीं	30	10
कुल		**300**	**100**

तालिका 2 : नशे के प्रकारों का वितरण (n = 300)

क्रमांक	नशीले पदार्थ का प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	मदिरा (शराब)	165	55
2	औषधीय नशीली दवाएँ	90	30
3	गांजा एवं संबंधित पदार्थ	30	10
4	अन्य नशीले पदार्थ	15	5
कुल		**300**	**100**

तालिका 3 : आयु वर्ग के अनुसार नशा-व्यसन से प्रभावित समूह (n = 300)

क्रमांक	आयु वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	18–35 वर्ष (युवा वर्ग)	174	58
2	36–50 वर्ष (कार्यशील वर्ग)	96	32
3	50 वर्ष से अधिक (वृद्ध वर्ग)	30	10
कुल		**300**	**100**

तालिका 4 : नशा-व्यसन का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव (n = 300)

क्रमांक	प्रभाव का प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	पारिवारिक कलह एवं घरेलू समस्याओं में वृद्धि	210	70
2	कोई स्पष्ट पारिवारिक प्रभाव नहीं	90	30
कुल		**300**	**100**

तालिका 5 : नशा-व्यसन का स्वास्थ्य पर प्रभाव (n = 300)

क्रमांक	स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट	198	66
2	कोई विशेष स्वास्थ्य प्रभाव नहीं	102	34
कुल		**300**	**100**

तालिका 6 : नशा-व्यसन का आर्थिक एवं कार्यक्षमता पर प्रभाव (n = 300)

क्रमांक	आर्थिक प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	कार्यक्षमता व आय में कमी / आर्थिक तनाव	186	62
2	कोई प्रमुख आर्थिक प्रभाव नहीं	114	38
कुल		**300**	**100**

तालिका 7 : नशा-व्यसन रोकथाम से संबंधित संस्थागत कमियाँ (n = 300)

क्रमांक	संस्थागत समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	जन-जागरूकता कार्यक्रमों का अभाव	225	75
2	नशा-मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्रों की सीमित उपलब्धता	216	72

अध्ययन के परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि युवा एवं कार्यशील आयु वर्ग नशा-व्यसन से सर्वाधिक प्रभावित है। लगभग 174 उत्तरदाताओं (58 प्रतिशत) के अनुसार 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग के व्यक्ति नशा-व्यसन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं, जबकि 96 उत्तरदाताओं (32 प्रतिशत) ने 36 से 50 वर्ष आयु वर्ग को प्रभावित बताया। इसके विपरीत, केवल 30 उत्तरदाताओं (10 प्रतिशत) ने वृद्ध आयु वर्ग में नशा-व्यसन की समस्या की पुष्टि की।

नशा-व्यसन का पारिवारिक जीवन, स्वास्थ्य एवं आर्थिक उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है। 210 उत्तरदाताओं (70 प्रतिशत) ने नशा-व्यसन के कारण पारिवारिक कलह एवं घरेलू समस्याओं की वृद्धि की सूचना दी, जबकि 198 उत्तरदाताओं (66 प्रतिशत) ने प्रभावित व्यक्तियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त, 186 उत्तरदाताओं (62 प्रतिशत) ने कार्यक्षमता एवं पारिवारिक आय में कमी, ऋणग्रस्तता तथा आर्थिक तनाव की स्थिति को स्वीकार किया।

अध्ययन ने संस्थागत स्तर पर विद्यमान कमियों को भी उजागर किया है। 225 उत्तरदाताओं (75 प्रतिशत) ने नशा-व्यसन से संबंधित जन-जागरूकता कार्यक्रमों के अभाव की ओर संकेत किया, जबकि 216 उत्तरदाताओं (72 प्रतिशत) ने ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-मुक्ति

एवं पुनर्वास केंद्रों की सीमित उपलब्धता को एक गंभीर समस्या बताया। इन कमियों ने ग्रामीण समाज में नशा-व्यसन की समस्या के बने रहने एवं उसके प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि जांजगीर-चाम्पा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन एक तेजी से बढ़ती हुई और बहुआयामी सामाजिक समस्या के रूप में उभर चुका है। तालिका 1 के अनुसार, 204 उत्तरदाताओं (68 प्रतिशत) द्वारा नशा-व्यसन की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की पुष्टि यह दर्शाती है कि यह समस्या अब केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित न रहकर सामुदायिक स्वरूप धारण कर चुकी है। केवल 30 उत्तरदाताओं (10 प्रतिशत) द्वारा इसे गैर-गंभीर माना जाना यह संकेत देता है कि अधिकांश ग्रामीण समाज इस समस्या की गंभीरता को अनुभव कर रहा है।

नशे के प्रकारों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मदिरा (शराब) सर्वाधिक प्रचलित नशीला पदार्थ है। 165 उत्तरदाताओं (55 प्रतिशत) द्वारा शराब को प्रमुख नशे के रूप में चिन्हित किया जाना यह दर्शाता है कि इसकी सामाजिक स्वीकृति, आसान उपलब्धता तथा कम लागत इसके व्यापक प्रसार के मुख्य कारण हो सकते हैं। औषधीय नशीली दवाओं का 90 उत्तरदाताओं (30 प्रतिशत) द्वारा उल्लेख किया जाना एक चिंताजनक तथ्य है, क्योंकि यह स्वास्थ्य-तंत्र से जुड़ी कमजोरियों तथा अनियंत्रित दवा-उपयोग की ओर संकेत करता है। गांजा एवं अन्य नशीले पदार्थों का सीमित किंतु उल्लेखनीय उपयोग यह दर्शाता है कि नशा-व्यसन के स्वरूप में धीरे-धीरे विविधता आ रही है।

आयु-आधारित विश्लेषण (तालिका 3) से यह स्पष्ट होता है कि 18–35 वर्ष का युवा वर्ग नशा-व्यसन से सर्वाधिक प्रभावित है। 174 उत्तरदाताओं (58 प्रतिशत) द्वारा इस आयु वर्ग को संवेदनशील बताया जाना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि बेरोजगारी, कार्य-दबाव, सामाजिक तनाव, तथा दिशाहीनता जैसे कारक युवाओं को नशा-व्यसन की ओर प्रेरित कर रहे हैं। 36–50 वर्ष का कार्यशील वर्ग भी इससे अछूता नहीं है, जबकि वृद्ध वर्ग में इसका प्रभाव अपेक्षाकृत कम पाया गया, जो जीवन-अनुभव एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ा हो सकता है।

नशा-व्यसन के पारिवारिक प्रभाव अत्यंत गंभीर पाए गए हैं। 210 उत्तरदाताओं (70 प्रतिशत) द्वारा पारिवारिक कलह एवं घरेलू समस्याओं में वृद्धि की सूचना यह दर्शाती है कि नशा-व्यसन परिवार की सामाजिक संरचना को कमजोर कर रहा है। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव भी स्पष्ट हैं, जहाँ 198 उत्तरदाताओं (66 प्रतिशत) ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट की पुष्टि की। यह स्थिति न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि स्वास्थ्य-तंत्र पर भी अतिरिक्त दबाव उत्पन्न करती है।

आर्थिक दृष्टि से भी नशा-व्यसन के दुष्परिणाम स्पष्ट हैं। 186 उत्तरदाताओं (62 प्रतिशत) द्वारा कार्यक्षमता एवं आय में कमी, ऋणग्रस्तता तथा आर्थिक तनाव की स्वीकारोक्ति यह दर्शाती है कि नशा-व्यसन ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिरता को कमजोर कर रहा है और गरीबी के दुष्चक्र को और अधिक गहरा बना रहा है।

अध्ययन में संस्थागत कमियों का उजागर होना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। 225 उत्तरदाताओं (75 प्रतिशत) द्वारा जन-जागरूकता कार्यक्रमों के अभाव तथा 216 उत्तरदाताओं (72 प्रतिशत) द्वारा नशा-मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्रों की सीमित उपलब्धता को गंभीर समस्या माना जाना यह दर्शाता है कि रोकथाम एवं उपचार के स्तर पर ठोस प्रयासों का अभाव है। इन संस्थागत कमजोरियों के कारण नशा-व्यसन की समस्या ग्रामीण समाज में स्थायी रूप से बनी हुई है।

समग्र रूप से, यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि जांजगीर-चाम्पा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन एक सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं संस्थागत संकटके रूप में विद्यमान है। समस्या की जटिलता को देखते हुए इसके समाधान हेतु बहु-आयामी रणनीति (जिसमें जन-जागरूकता, स्वास्थ्य-सेवाओं का विस्तार, पुनर्वास सुविधाओं की उपलब्धता तथा युवाओं के लिए सकारात्मक रोजगार एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम) अत्यंत आवश्यक प्रतीत होते हैं।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बिलासपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में नशा-व्यसन एक गंभीर एवं निरंतर बढ़ती सामाजिक समस्या के रूप में स्थापित हो चुका है, जिसका प्रभाव व्यक्ति, परिवार एवं संपूर्ण ग्रामीण समाज पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि मदिरा एवं औषधीय नशीली दवाओं के बढ़ते सेवन ने पारंपरिक ग्रामीण सामाजिक संरचनाओं को

प्रभावित किया है तथा सामाजिक एकता को कमजोर किया है। युवा एवं कार्यशील आयु वर्ग इस समस्या से सर्वाधिक प्रभावित है, जिसका प्रमुख कारण बेरोज़गारी, आर्थिक दबाव, सहकर्मी प्रभाव तथा परिवर्तित जीवन-शैली से संपर्क है। नशा-व्यसन के दुष्परिणामों में पारिवारिक संघर्ष, घरेलू हिंसा, स्वास्थ्य में गिरावट, कार्यक्षमता में कमी एवं आय की हानि प्रमुख हैं, जिससे ग्रामीण परिवारों में गरीबी एवं सामाजिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि नशा-व्यसन के दुष्प्रभावों के प्रति सीमित जागरूकता, नशा-मुक्ति एवं पुनर्वास सुविधाओं की अपर्याप्त उपलब्धता तथा सामाजिक कलंक के कारण प्रभावित व्यक्तियों को समय पर उपचार नहीं मिल पाता। यद्यपि नशा-नियंत्रण से संबंधित कानून एवं कल्याणकारी योजनाएँ विद्यमान हैं तथापि जमीनी स्तर पर संस्थागत प्रयास इस समस्या को नियंत्रित करने में अभी तक पर्याप्त रूप से प्रभावी सिद्ध नहीं हो पाए हैं। समग्र रूप से अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि ग्रामीण समाज में नशा-व्यसन की समस्या से निपटने हेतु एक समन्वित एवं बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जन-जागरूकता अभियानों का विस्तार, सामुदायिक सहभागिता, स्वास्थ्य एवं पुनर्वास सेवाओं का सुदृढ़ीकरण तथा ग्रामीण युवाओं के लिए लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। निवारक एवं पुनर्वासात्मक उपायों का प्रभावी क्रियान्वयन बिलासपुर जिले में स्वस्थ, स्थिर एवं सतत ग्रामीण सामाजिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है।

सन्दर्भ:

1) *Aggarwal, A. (2001). Narcotic drugs. National Book Trust.*
2) *Fraser, C. (1988). The facts about drugs and alcohol. Bantam.*
3) *Joshi, S. (2017). Rethinking rural development and social change. Rawat Publications.*
4) *Khan, M. Z. (1985). Drug use amongst the college youth. Somaiya Publications.*
5) *Ksir, C., & Ray, O. (2014). Drugs, society, and human behavior (15th ed.). McGraw-Hill Education.*
6) *Lalitha, N. (2004). Rural development in India. Dominant Publishers and Distributors.*
7) *Aswathy, K. L., & Raja, A. R. (2019). Prevalence of substance use and awareness about its ill effects among people residing in a rural village in Chamarajanagara district, Karnataka. Journal of Evolution of Medical and Dental Sciences, 8(41), 3042-3046.*
8) *Chowdhury, A. N., Sanyal, D., Dutta, S. K., & De, R. (2004). Drug use in a rural community in Bihar: Some psychosocial correlates. Indian Journal of Psychiatry, 46(2), 154-159.*
9) *Dixit, S., & Kant, S. (2016). Substance use in India: Lessons from a district. LAP Lambert Academic Publishing.*
10) *Kulsudjarit, K. (2004). Drug problem in Southeast and Southwest Asia. Annals of the New York Academy of Sciences, 1025(1), 446-457.*
11) *Nadeem, A., Rubeena, B., Agarwal, V. K., & Piyush, K. (2009). Substance abuse in India. Pravara Medical Review, 4(4), 4-6.*
12) *Panda, S., & Majumder, A. (2013). Pattern of substance abuse: A community-based study in rural West Bengal. International Journal of Research in Sociology and Social Anthropology, 1(2), 37-40.*
13) *Paramguru, R., & Das, S. (2017). Addictions among rural areas of India: A community-based study. Global Journal of Addiction & Rehabilitation Medicine, 3(4), 555618.*
14) *Prasad, S., & Mishra, V. (2010). Study on drug abuse in the border districts of Punjab. Institute for Development and Communication.*
15) *Saluja, B. S., Grover, S., Irpati, A. S., Mattoo, S. K., & Basu, D. (2007). Prevalence of drug dependence in a rural area of Haryana. Indian Journal of Psychiatry, 49(1), 33-37.*
16) *Sidhu, I. S., & Kaur, P. (2018). Drug abuse: Uncovering the burden in rural Punjab. Journal of Family Medicine and Primary Care, 7(1), 164-171.*
17) *Singh, A., & Gupta, S. (2017). Epidemiology of substance use and dependence in the state of Punjab, India: Results of a household survey. The Lancet Psychiatry, 5(3), 229-238.*
18) *Ministry of Social Justice and Empowerment. (2019). Magnitude of substance use in India. Government of India.*
19) *United Nations Office on Drugs and Crime. (2012). World Drug Report 2012. United Nations.*
20) *United Nations Office on Drugs and Crime. (2016). Prevention of drug use and treatment of drug use disorders in rural settings.*